

2893

MS. A. 9. 2. 1. 3.

MS. A. 9. 2. 1. 3.

उभेन मय्युक्तं न

नाम॥ पञ्चमदिगलला॥ पुनश्च सत्कात्रिण बोद्धुं जलधननाम
महाविहात्रियं॥ पञ्चमदिगलला॥ इन्द्रगृहनिवसत॥ शिवजा
वाय्वकृता हव॥ शिवराज नाम्नाया॥ दात्रास्त्रिजानसहिगस
सकत्रात्रिषु॥ कथं॥ हुं हुं नमनिवापुर्वज ननीवा॥ उ नमज नम
नृगेषु॥ सकलज नमपाडित॥ माहापातकादि॥ उपपातक कृय
त्व॥ गइल॥ हुं हुं नम शिवराजस्त्रिपुत्रसहिगस॥ ज्ञायू
षात्रागधने॥ व्यप्यदि॥ गुरुरलसंप्राप्ति कामनार्थ॥ गृहलभ वत्रा

वो

गुरुनमस्तु लज्जे॥ आदिष्यादिनवग्रहजनिग॥ सर्वत्रिषु पुस्तमन
कामनाया॥ यागिनीदधेया॥ अष्टयागिनी॥ सर्वत्रिषु पुस्तमनका
मनाया॥ ग्राउवा ग्रादकाग्निउदकापुस्तमाल॥ रायापडवेना॥ ना
र्थ॥ धर्मार्थकाममादृ॥ वपुवर्गमिदीरु लप्राप्ति॥ कामनार्थ॥ उथ
सामनार्थकागमने॥ लथसमस्तमान्यरु ल॥ प्राप्ति कामनाया॥ अ
स्मिन्दिने॥ शिवराजस्त्रिपुत्रसहिगस॥ शिवराजस्त्रिपुत्रसहिगस
कथ्यत्रादि॥ गथजा ग्रावराहनदिने॥ शिवराजस्त्रिपुत्रसहिगस॥ दात्रा



Handwritten mark resembling a stylized 'A' or 'H' in blue ink.

2893	
ASHA ARCHIVES	

लितीज। लिपूत्रुषनामन॥ कृगनिषावनि॥ अपथद्वत्रसफमिठु
 नसंयुक्तवठकेत्रिनामभत्रनि॥ अमदाय्यविलाकित्यवत्रस्यव
 ठाद्वत्रभगमहामानसु॥ अमदाय्यविलाकित्यवत्रस्यसुडाकोपु
 अमैत्रियपुगिज्ञानामसु॥ अमदाय्यविलाकित्यवत्रस्यसंधत्र
 सुडाकोपु॥ अकृत्रुषनामसु॥ अद्वत्रनामाशुस्यसुडा
 सुडादि॥ अजयधर्मसुकात्रि॥ वडकिहनाममहाविज्ञाननि
 वसत॥ अवजाय्यकृत्रुषनामसु॥ असिगडाठिनामस्य॥ साहसु

अद्वत्राजलिपूत्रुषनामन॥ गगपूत्रुषनामन॥ ददस्यअवजा
 वाय्यअसिगडाठिस्य॥ महसंपदस्य॥ अद्वत्राजलिपूत्रुषस्य
 विद्धिहिनक्याहिन॥ एकहिनीनवदर्शन॥ पुन्यएवमुक्तसर्व॥ त्य
 ससादासुत्रवत्र॥ नजानकिगपूजा॥ कठुबुआदयसुत्रा॥ नकाह
 किंकरीष्यामि॥ नजानहंगवार्वन॥ नजानहंत्यसुत्रपत्र॥ अत्रि
 जन्नवावागुन॥ नकम्यवाहंजानामि॥ एकित्ववत्रनवय॥ मामु
 किनिधिसंधय्य॥ नित्यपूजापुगुहय॥ तद्वमार्गममिनाथ॥ ह

दत्वा वत्रा वहं ॥ अथ गार्धराह्यानि ॥ क्रिय गहं नि सं मया ॥ दासाहं
मिमिर्मा मत्वा ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ आवाहनं न जानामि ॥ नैव
जानामि पूजनं ॥ ५ ॥ नैव विष्णुर्न वापि ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥ यत्
गं इत्कुर्तवापि ॥ मया मूर्च्छा विजायते ॥ कं गद्य कुत्सया नाथ ॥ य
दि मां प्राहिदहिनां ॥ क ने गु षत्र गी नास्ति ॥ त्वं मय षत्र गी मया ॥ ग
स्मात्कारं न्य हा वन ॥ ग क मां पत्र म्य ष्वत्र ॥ ७ ॥ न मां लो क ष्वत्रा च ॥ ८ ॥
१ ॥ धत्र कत्र एते ॥ कृत सत्काय हात्री ॥ कत्र धृग मृगा वम्मा ॥ निर्मल

ज्ञान धर्म ॥ विकसित मति धत्र ॥ प्राफ संवाधियात्र ॥ स कत्र एव न
व नो ॥ पातु वा शु लोक नाथ ॥ न जानामि शु दयत्रा ऊस्ति पूरूष स्य ॥
याप स मत्सं प्रति दक्ष यामि ॥ काय नवा वाम न सा कृत् ॥ यत्स्य न्य
मनि मन्त्र मा दयामि ॥ ग दय वा क्षे पत्रि ग्म मयामि ॥ गत्र प्रय म्य ष
त्र गी पु यामि ॥ काय वप्रि त्या ॥ पुति क्ष ष यामि ॥ संवृद्ध मा ग्न च स मा
थ यामि ॥ वाडि स मय प्र नि धन चिह्नं ॥ न जानामि शु दयत्रा ऊस्य
क मत्स्य गार्धराह्य मारु स न पत्रा ऊ स कृ पया ॥ क मत्स्य पत्र म्य ष्वत्र ॥

ॐ श्री गुरुः ॥ सम्यग १०२६ ॥ निमित्तं कुरु कुरु ॥ गुणदत्तः मंगलवा
नः ॥ ॐ कुरु कुरु सूरवाहा लया ॥ ॐ यग धर्म सदानं ॥ ॐ देवताज क
उं ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ वाहा लया ॥ ॐ सिंहजीवि ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ दान
या ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ पुं न्य नं ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ दान
सा ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥
पू ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥
ॐ ॥ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥